बाबा कोकिलचंद का देवअवतार

हिन्दू धर्म में स्वयं परमात्मा ही अवतार लेते है जैसे नरसिंह, परशुराम, राम, कृष्ण एवं बुद्ध का अवतार आदि। अवतार की दूसरी परम्परा में हमें देवमानव या मानवदेव के रूप में परमात्मिक शक्ति का प्रकट होने की गाथा की परम्परा भी देखने को मिलती है। कहने का तात्पर्य यह है कि नर में नारायण की शक्ति जाग उठती है और नर की चेतना का रूपांतरण नारायण के रूप में हो जाता है । इन्हें हम (HUMAN GOD) या मानव देव के रूप में जानते है। ये भी देवता की तरह ही अमर और देव शक्तियों से युक्त होते है। ये भी सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान बन जाते है। इनमें भी मनवांछित फल प्रदान करने का सामर्थ होता है और ये सर्वपूज्य हो जाते है देवताओं की भांति।

बाबा कोकिलचंद देव भी इसी श्रेणी के मानवदेव है जिनका अवतार गंगरा ग्राम की पवित्रभूमि में आज से लगभग सात सौ वर्ष पूर्व हुआ था । इनका

जन्म पदूमपुर में एक भूमिहार ब्रहमण के यहाँ हुआ। इनके पिता का नाम ठाकुर रूपचंद्र था। इस गांव को छोड़कर कोकिलचंद अपने भाईयों के साथ कैयार गाँव सिकन्दरा प्रखण्ड में जा वसे। परंतु इन्होने इस गाँव को भी छोड़ दिया और अंचारी गाँव के निवासी बन गये। वहाँ से उठकर कोकिलचंद सपरिवार उलाई एवं नागी नदी के बीच भूखण्ड पर अपना निवास बनाया और इसका नाम 'गंगरा' रखा। इस गांव में एक कृषक परिवार के रूप में रहने लगे और अपनी गृहस्थी बसाई।

24 अप्रेल 2010 से पूर्व का बाबा कोकिलचंद मंदिर गंगरा

इसी क्रम में अगहन माह के पूर्णिमा रविवार दिन को कोकिलचंद बनहारों के साथ लकड़ी लाने जंगल जाने को तैयार हुए। उन्होने अपनी भाभी रहमत से कहा कि ईख पेरने के लिए कोलसार बनाने हेतु मै बनहारों के साथ जंगल जा रहा हूँ। इसलिए मुझे भोजन करने के लिए कुछ दे दें। भोजन देते समय रहमत ने कहा कि कोकिलचंद आपको आज बाघ खा

जाएगा। रहमत की यह भविष्यवाणी सही निकली। जंगल में लकड़ी काटकर
कोकिलचंद लौटने की तैयारी करने लगे तो एक विशाल बलशाली बाघ आ खड़ा हुआ और कोकिलचंद पर आक्रमण कर दिया।

देवघर मंदिर (झारखंड) मंदिर प्रांगन में बाबा कोकिलचंद पिंडी

अत्यंत बलशाली ठाकुर कोकिलचंद बाघ से भीड़ गये और उन्होने उसे मार गिराया। लहुलुहान हो वे घर की ओर ज्योहिं बढे की एक बाघीन ने उन्हें रोक लिया। बाघ से लड़ते कोकिलचंद में दिव्य वीरता का भाव ने उनकी चेतना को निर्मल और विराट बना दिया। इस भाव से ओतप्रोत कोकिलचंद मृत्यु पर बिजय हासिल कर अमरचेतना से जुड़ गये। उनकी विराट चेतना ने बाघिन में स्वयं माँ परमेश्वरी का साक्षात्कार किया और सहज भाव से आत्म समर्पन कर अपना प्राण माँ की चरणों में न्यौछावर कर दिया। विश्वमयी माँ की सारी शक्ति कोकिलचंद में समाहित हो गई और ठाकुर कोकिलचंद, 'कोकिलचंद' देव के रूप में रूपांतरित हो गये। सहस्त्र शारदा उनके कंठ में विराजमान हो गई और वरदायनी गौरी की

सारी शक्ति उन्हे प्राप्त हो गई। अब कोकिलचंद सर्वत्र, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी हो गये।

कोकिलचंद ने इस शक्ति का परिचय सर्वप्रथम गिद्धौर राज्य क तत्कालिक राजा को उनके पास जाकर दिया। गिद्धौर महाराज मुसलमान राजा के द्वारा किसी कारण बंदी बना लिये गये थे और दिल्ली के कैद खाने में रखे गये थे।

राजा को कोकिलचंद ने वहाँ जाकर दर्शन दिया और मुक्त होने की युक्ति बताई। राजा को मुक्त कराकर वे उन्हें गिद्धौर तक पहुँचाया और स्वयं उनसे अलग हो गये। राजा ने कोकिलचंद की खोज की और यह जानकर हैरान हो गये कि कोकिलचंद कुछ दिन पहले ही बाघ द्वारा मारे गये थे।

कुछ पल के लिए राजा सौभाग्य और पश्चताप का चिंतन करते हुए कोकिलचंद को अपना आराध्य के रूप में स्वीकार करते हुए उनकी पिंडी बनवाई, मंडपा बनवाया एवं उनकी पूजा अर्चना हेतु 18 बीघा जमीन सेवायत को प्रदान किया जिससे बाबा की पूजा अर्चना होती है।

अपनी देव शक्ति का परिचय उन्होंने देवघर मन्दिर (झारखण्ड) ध्वजा को बार–बार झुकाकर दिया। भगवान शिव ने कोकिलचंद के देवशक्ति को पहचान कर उन्हें अपने मन्दिर के पश्चिम द्वार सरस्वती मंदिर के सामने स्थापित करवाया और देवघर मंदिर के सभी देवी–देवताओं के साथ पूजा पाने का अधिकार प्रदान किया।

कोकिलचंद ने अपनी ईश्वरीय शक्ति का परिचय मरी गाय को जीवन प्रदान कर दिया। कहा जाता है कि कोकिलचंद की शक्ति का प्रमाण पाने के लिए एक गाय मारकर उन्हें जीवित करने को कहा गया। कोकिलचंद के भगत ने भगवान विष्णु का नाम लेकर मरी गाय पर अक्षत छिट दिया और गाय जीवित हो गई। दूर–दूर से आये लोगों ने इस ईश्वरीय चमत्कार को देखा और उस दिन से कोकिलचंद सर्वपूज्य देव बन गये।

बाबा कोकिलचंद मंदिर गंगरा

बाबा काकिलचंद देव शिव स्वरूप, आशुतोष, क्षमाशील, दयासागर मनवांछित फल प्रदान करने वाले बलिराज हैं। श्रद्धा और विश्वास के साथ इनकी अर्चना और प्रार्थना करनेवाले अपनी मनोकामना पूर्ण पाते है। इनकी

यशगाथा दूर–दूर तक फैली है और यह एक तीर्थस्थल के रूप में माना जाता है जहाँ सारे देवी–देवताओं का नाम उद्घोष होता है उसके साथ बाबा कोकिलचंद के नाम का भी जयघोष किया जाता है। इन्हें तेज पुनीत और ईश्वरीय अंश शक्तिपुंज कहा गया है।

नेमान पर्व (बाबा कोकिलचन्द महोत्सव):–

''अन्नम् ब्रहम अस्तिः''

अतः अन्नम् अर्च की आस्था से जुड़ा है नवान्न पूजन का त्यौहार । प्रायः सभी हिन्दु समाज में यह त्यौहार मनाया जाता है। यह त्यौहार अगहन माह में ही मनाने की परम्परा है। क्योंकि यह माह स्वयं श्रीकृष्ण का प्रिय माह है। '' मासानाम मार्गशिषोअहम'' कहकर भगवान कृष्ण ने इस माह की महिमा बताई।''बाबा कोकिलचंद धाम गंगरा'' में नवान्न का त्योहार एक विशेष उत्सव के रूप में मनाने की परम्परा है। इस परम्परा की शुरूआत श्री बाबा कोकिलचंद का देवरूप धारण होने एवं उनका देव मन्दिर मंडपा की स्थापना काल से हुई। इसका इतिहास सात सौ वर्ष पूर्व से रहा है। इस गांव में ''नवान्न'' के पूर्व नया अन्न नही खाया जाता है विशेष परिस्थिति में ब्रह्मण को नवान्न दानकर ही नया अनाज का उपयोग किया जाता है। इस दिन रात्रि में बाबा कोकिलचंद का ''वामर'' किया जाता है और इसी दिन से बाबा पूजा प्रारम्भ होकर आषाढ़ पूजा तक चलते रहती है। चतुर्मास अर्थात सावन भादो, आश्विन कार्तिक वामर पूजा स्थगित रहती है। 2015 से बाबा कोकिलचंद महोत्सव (नवान्न महोत्सव) विशेष चहल पहल के साथ आधुनिक जीवन में बाबा कोकिलचंद संदेश का महत्व जन–जन का पहुंचाने के उदेश्य से दिन में आगन्तुक सज्जनों का स्वागत एवं मिलन समारोह और संध्या में बाबा के (बामर) पूजा के पूर्व 1008 दीप जलाकर ज्योति पर्व मनाने की नयी परम्परा की शुरूआत की गई है। इस अवसर उपस्थित होकर उत्सव का भागीदारी बनने के लिए गणमान्य लोगों

को आमांत्रित किया जाता है। जहां कई जिलों के विभिन्न गावों के श्रद्धालु भाग लेकर बाबा का आर्शिवाद प्राप्त करते है।

आखारी पूजाः–

यह पर्व ही हर साल आसाढ़ माह में सात सौ साल से मनाया जाता है। धान रोपने से पहले बाबा का आषाढ़ी पूजा करके ही धान के रोपाई चालु होता है इस दिन भी बाबा का वार्षिक पूजा धुम–धाम से मनाया जाता है और अगले दिन से धान की रोपाई चालु होने की परम्परा आज तक पालन किया जा रहा है।

सदियों से शराब मुक्त गंगराः–

सोम रस एवं सुरा पान की परम्परा तो सभ्यता काल से चली आ रही है। परन्तु सभ्य समाज ने इसका विरोध की प्रधानता भी परम्परा के साथ रहा है।

इसी जरूरत रूपी परम्परा को आगे बढाते हुए देवधिदेव महादेव के परम शिष्य ''मानव देव बाबा कोकिलचंद'' अपने अनुयायी (Follower) एवं इस गांव में रहने वाले लोंगों को सक्त निर्देश दिया था कि

''जो व्यक्ति अपने जीवन में कभी भी शराब सेवन नही करेंगें उनका यश, बल, धन, विद्या सभी में वृद्धि होगी''

''इस गांव में रहने वाले लो जिसने भी शराब सेवन किया उसका सब कुछ नाश हुआ।

तभी तो सदियों से शराबमुक्त बाबा कोकिलचंद धाम गंगरा श्रृषिमुनि एवं साधु संतों का भी आकर्षण का केन्द्र रहा–

(1) फ्रांसिस बुकानन–

एक ब्रिटिश सर्वेक्षक फ्रांसिस बुकानन ने सन् 1810–12 ई0 पुराने भागलपुर जिला का सर्वेक्षण करते हुए गंगरा भी आए थे। और उन्होंने गंगरा की मिट्टी, पानी एवं उच्च संस्कार में पले बढ़े लोगों की प्रशंसा की थी।

(2) महान स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक आचार्य बिनोबा भावे व संत स्वामी सहजानंद सरस्वती का भी बाबा दरबार में आगमन हुआ था।
(3) जमुई के भक्त कवि अर्जुनदास और उनके परम शिष्य कीर्तन सम्राट स्व0 विन्देश्वरी सिंह (बीहट बेगुसराय) ने भी यहां का संस्कृति को नमन करते हुए बाबा के संदेश को फैलाने में मदद किया।

तो आयें हम सब बाबा कोकिलचंद का संदेश जन–जन तक पहुँचाने में भागीदारी निभाये और पुण्य का भागी बने।

बाबा कोकिलचंद के चरणों में समर्पित
विनित
चुनचुन कुमार
शिक्षक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता
एवं समस्त ग्रामवासी
बाबा कोकिलचंद धाम गंगरा, प्रखंड–गिद्धौर, जिला–जमुई
7761908231
ई–मेल–ckchunchunkumar18@gmail.com

सात सौ साल प्राचीन बाबा कोकिलचंद धाम गंगरा में आपका हार्दिक अभिनन्दन है।

बाबा कोकिलचंद महोत्सव

नेमान (नवान्न) महापर्व- 2016

कार्यक्रम – 05.12.2016 (सोमवार)

स्थान - बाबा कोकिलचंद धाम-गंगरा प्रखण्ड-गिद्धौर (जमुई)

कार्यक्रम

दोपहर 1:00 बजे	- आगन्तुक सज्जनों का स्वागत एवं मिलन समारोह
शाम 4:00 बजे	- आधुनिक जीवन में "बाबा कोकिलचन्द संदेश" का महत्व पे विचार गोष्ठी
शाम 7:00 बजे	- 1008 दीप से बाबा का सामूहिक महाआरती
रात्रि 9:00 बजे	- बाबा का वार्षिक पूजन (बामर)

विनीत- जय बाबा कोकिलचंद सेवा समिति, गंगरा, गिद्धौर, जमुई (बिहार)

बाबा कोकिलचंद महोत्सव 2016

प्रशस्ति-पत्र

प्रेरणा : बाबा कोकिलचंद को प्रेरणास्त्रोत मान शराब को पीना तो दूर, छूना भी गुनाह समझते हैं लोग

सदियों से शराबमुक्त गांव गंगरा बना नजीर

अरविंद कुमार , जमुई

शराबबंदी कानून लागू कर बिहार को शराबमुक्त प्रदेश बनाने के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का प्रयास के बीच सदियों से शराबमुक्त गांव गंगरा पूरे प्रदेश को संदेश दे रहा है। गिद्धौर-झाझा मुख्य मार्ग पर गिद्धौर से तीन किमी की दूरी पर अवस्थित यह गांव उलाई और नागी नदी के मध्य में होने के कारण इसे गंगरा नाम से जाना जाता है।

गांव का सात सौ वर्ष पुराना इतिहास है। गांव के लोग बताते है कि उनके पूर्वज सिकन्दरा थाना क्षेत्र के कैयार गांव के मूल निवासी है। यहां के लोग बाबा कोकिलचंद को आराध्य व प्रेरणास्त्रोत मानकर शराब को पीना तो दूर, छूना भी गुनाह समझते है। ग्रामीण व पेशे से शिक्षक अरविंद कुमार बताते है कि इस गांव के लोग शराब तो नहीं ही छूते है। यहां आने वाले आगंतुक भी शराब को हाथ नहीं लगाते है। ग्रामीण चुनचुन सिंह एवं प्रसिद्ध गीतकार, लेखक, कवि ज्योतेन्द्र मिश्र बताते है कि सात सौ वर्ष पूर्व की मान्यता है कि हमारे पूर्वज कोकिलचंद जो जामुखरैया जंगल में बाघिन से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे। इसके पहले उन्होंने अपने हाथों से बाघ को मार डाला था। बाघिन ने बाद में हमला किया तो उनका अपना सिद्धांत था कि महिला पर हाथ नहीं उठाना है और उन्होंने बाघिन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। इसके साथ ही कई और मान्यताएं गांव और बाबा कोकिलचंद से जुड़ी हुई है। शराब मुक्त गांव गंगरा और शराब मुक्ति के लिए प्रेरणा के स्रोत बाबा कोकिलचंद की प्रेरणा से प्रभावित जिले के समाजसेवी ई. आइपी गुप्ता ने भी अपने गांव में शराबमुक्ति अभियान शुरू किया। उसका फलाफल भी आना शुरू हुआ। बाद में 5 अप्रैल को बिहार में पूर्ण शराबबंदी लागू हो जाने से काम को अंजाम देने में समाजसेवी को सहूलियत हो गई।

गांव की महिला गृहिणी साधना पांडेय कहती है कि शराबमुक्त गांव होने का खासा लाभ मिलता है। एक तो युवा गलत रास्ते पर जाने से बचते है तो दूसरी ओर शराब के कारण परिवारों में कलह की संभावना से मुक्ति मिली हुई है। सेना में कार्यरत राजीव कुमार कहते है कि सेना में शराब कैंटीन से उपलब्ध कराए जाते है लेकिन वहां भी शराब को हाथ नहीं लगाते। इसी प्रकार गंगरा में ही शिक्षक के पद पर कार्यरत बेगूसराय के अजय कुमार, हांसडीह जमुई के मो. सलाम, किसान नरेश सिंह, आको देवी आदि बताते हैं कि कोकिलचंद को ही आस्था का केन्द्र मानकर शराब मुक्त गांव होना बड़ी बात है। अब तो शराब बंदी के बाद ऐसे कई गांव मिल जाएंगे जहां शराब लोग नहीं पीते है लेकिन सदियों से शराबमुक्त गांव होना अपने आप में मायना रखता है। ग्रामीण बताते है कि यहां की बच्चियों की भी शादी के वक्त रिश्ता तय करने में इस बात का खास ख्याल रखा जाता है कि गांव नहीं तो कम से कम परिवार जरूर शराबमुक्त हो।

दैनिक जागर की खबरें।

बाबा कोकिलचंद भजन

बाबा नगरिया पिंडी सोभे
कोकिल चन के
सभे गिधौरिया गाबय गीता
कोकिल चन के

दुही थाप में ओंघरल बघबा
आगू अइली बघिनियां हो
बाबा कहलकै तोरा नय मारबो
बाघा कँ तोय गिरथैनियां हो
भोग लगैलखिन दुर्गा मइया
कोकिल चन के
सभे गिधौरिया गाबय गीता
कोकिल चन के

देहि छोड़ि के कोकिल बाबा
छन में धापला जेहल हो
महदेवा राजा छल बन्दी
हुनका जाय छोरैलका हो
खोजि खोजि के राजा
थ क ला
कोकिल चन के
सभे
धन भेल गंगरा के धरती
एलखिन शिव केअवतारी
निर्मल मन सें कीर्तन करहो
बुझथुन भोला भंडारी
ध्यान धरै सभे नर नारी
सुमिरै हर एक सोम बारी
सभे

ज्योतिंद्र मिश्र
कवि एवं गीतकार
मांगोबंदर ;जमुई